रवि बाबू के कुछ गीत

रघुवंशलाल गुप्त
आई० सी० एस०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग
१९५०

गोलोकवासी पूज्य पिताजी की
पुण्यस्मृति में

भूमिका

श्री रघुवंशलाल जी ने रवीन्द्रनाथ के कई गीतों का सरल और सुबोध हिंदी में अनुवाद किया है। यह पुस्तक उन्हीं रूपान्तरित गीतों का संग्रह है। इस प्रकार सुबोध हिंदी में रवीन्द्रनाथ के गीतों को उपस्थित करने का शायद यह प्रथम प्रयास है।

रवीन्द्रनाथ के गीत भारतीय साहित्य की अमूल्य संपत्ति हैं। उनका सबसे बड़ा गुण यह है कि वे सीधे हृदय तक पहुँचते हैं। उनकी भाषा सहज और काव्यगुणों से परिपूर्ण है, उनके सुर मोहक और प्रभावोत्पादक हैं और उनके भाव अत्यन्त उच्च कोटि के हैं। रवीन्द्रनाथ के गीतों को हृदय-हारी बनाने के सबसे बड़े साधन उनके सुर हैं। इन सुरों के सहारे ही मानो ये गान उड़कर हृदय में तेज़ी से प्रवेश कर पाठक को मुग्ध कर देते हैं। इसीलिए रवीन्द्रनाथ के गानों को भाषान्तरित करना बड़ा कठिन कार्य है। यदि काव्यगुणों को रखने का प्रयत्न किया जाता है तो सुर हाथ से निकल जाता है और यदि सुर को ही सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया जाता है तो भाषा जवाब दे जाती है। तीनों का निभा लेना एक प्रकार से असंभव कार्य है। इन गीतों में बड़े मधुर आध्यात्मिक रस का साक्षात्कार होता है परन्तु रवीन्द्रनाथ ने कहीं भी 'भगवान' या 'ईश्वर' का नाम नहीं लिया। वस्तुतः उनके 'सुन्दर', 'प्रिय' 'अन्तरतर' आदि विशेषण और 'वह' आदि सर्वनाम बड़े व्यापक अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं। इन गीतों का व्यक्तिगत प्रेम के रूप में भी रसास्वादन किया गया है और राष्ट्रीय तथा आध्यात्मिक रूप में भी। समासोक्ति पद्धति पर लिखे हुए सन्तों के गीतों में विशेषण की विच्छित्ति से रसानुभूति होती है परन्तु इन गीतों का समूचा वातावरण ही मधुर अध्यात्म रस की अनुभूति कराता है। इस रसानुभूति में बँगला भाषा का व्याकरण भी रवीन्द्रनाथ का बड़ा भारी सहायक सिद्ध हुआ है। हिंदी की भाँति बँगला की क्रियाओं में लिंगभेद और वचनभेद नहीं होता, इसीलिए इन गीतों की क्रियाएँ व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होकर गीतों को अधिक रहस्यमय बना देती हैं।

श्री रघुवंशलाल जी इन गीतों के इन गुणों से खूब परिचित हैं। उन्होंने भरसक इन गीतों को हिंदी में मूल के निकट लाने का प्रयत्न किया

है। परन्तु उन्होंने सबसे अधिक ध्यान इस बात का रखा है कि गीतों की भाषा दुर्बोध न हो जाय, क्योंकि अगर सब गुण आ भी गये और भाषा ही जटिल और दुर्बोध हो गई तो अनुवाद का उद्देश्य ही व्याहत हो गया। इसीलिए मेरे विचार से भाषा को सहज बनाने का उनका उद्योग अच्छा ही हुआ है। यह भाषा ज़बर्दस्ती बनाई हुई आम फ़हम ज़बान नहीं है बल्कि सचमुच सहज और स्वाभाविक है। मैंने कई गीतों को मूल से मिलाकर देखा है। खड़ी बोली के व्याकरण और छंदों के नियमों के बंधन के भीतर से जितना निकटतम भाव दिया जा सकता है उतना देने का उन्होंने शक्ति भर प्रयत्न किया है। मेरा विश्वास है कि ये गान पाठक को रवीन्द्रनाथ के गानों का बहुत कुछ आस्वाद दे सकेंगे और मूल गीत पढ़ने की ओर उनकी अभिरुचि भी बढ़ायेंगे।

हिंदीभवन, शान्तिनिकेतन
१३-४-४७

हजारीप्रसाद द्विवेदी

वर्णानुक्रमिक सूची

(जो गीत गीताञ्जलि में से लिए गए हैं उनके आगे कोष्टक में "गी" दिखाया गया है)

रवि बाबू के कुछ गीत

१

नहीं माँगता, प्रभु, विपत्ति से
मुझे बचाओ, त्राण करो
विपदा में निर्भीक रहूँ मैं,
इतना, हे भगवान, करो।
नहीं माँगता दुःख हटाओ
व्यथित हृदय का ताप मिटाओ
दुःखों को मैं आप जीत लूँ
ऐसी शक्ति प्रदान करो
विपदा में निर्भीक रहूँ मैं,
इतना, हे भगवान, करो।

कोई जब न मदद को आये
मेरी हिम्मत टूट न जाये।
जग जब धोखे पर धोखा दे
और चोट पर चोट लगाये—
अपने मन में हार न मानूं,
ऐसा, नाथ, विधान करो।
विपदा में निर्भीक रहूँ मैं,
इतना, हे भगवान, करो।

नहीं माँगता हूँ, प्रभु, मेरी
जीवन नैया पार करो
पार उतर जाऊँ अपने बल,
इतना, हे करतार, करो।
नहीं माँगता हाथ बटाओ
मेरे सिर का बोझ घटाओ
आप बोझ अपना सँभाल लूं
ऐसा बल-संचार करो।
विपदा में निर्भीक रहूँ मैं
इतना, हे करतार, करो।

सुख के दिन में शीश नवाकर
तुमको आराधूं, करुणाकर।
औ' विपत्ति के अन्धकार में
जगत हँसे जब मुझे रुलाकर—
तुम पर करने लगूं न संशय,
यह विनती स्वीकार करो।
विपदा में निर्भीक रहूँ मैं
इतना, हे करतार, करो।

२

अरे भीरु, कुछ तेरे ऊपर, नहीं भुवन का भार
इस नैया का और खिवैया, वही करेगा पार।
आया है तूफ़ान अगर तो भला तुझे क्या आर
चिन्ता का क्या काम चैन से देख तरंग-विहार।
गहन रात आई, आने दे, होने दे अंधियार--
इस नैया का और खिवैया वही करेगा पार।

पश्चिम में तू देख रहा है मेघावृत आकाश
अरे पूर्व में देख न उज्ज्वल ताराओं का हास।
साथी ये रे, हैं सब "तेरे," इसी लिए, अनजान
समझ रहा क्या पायेंगे ये तेरे ही बल त्राण।
वह प्रचण्ड अंधड़ आयेगा,
काँपेगा दिल, मच जायेगा भीषण हाहाकार—
इस नैया का और खिवैया वही करेगा पार।

३

अपने तुझे छोड़ बैठेंगे,
  हो जायेंगे वाम
इसकी चिन्ता करने से तो
  नहीं चलेगा काम।
    आशा-लता टूटकर तेरी
    हो जायेगी तृण की ढरी
    और कदाचित नहीं फलेगा
      उसमें फल अभिराम—
    इसकी चिन्ता करने से तो
      नहीं चलेगा काम।

पथ में अन्धकार छायेगा
यही सोच क्या रुक जायेगा ?
अरे बावले, बार बार तू
पथ में दीप जलायेगा—
और कदाचित नहीं जलेगा
तेरा दीप ललाम।
इसकी चिन्ता करने से तो
नहीं चलेगा काम।

सुन कर तेरे मुख की वाणी
घिर आयेंगे वन के प्राणी ;
अरे बावले, किन्तु कदाचित
इस तेरी जानी-पहिचानी
दुनिया का दिल नहीं हिलेगा
सुन तेरा कुहराम—
इसकी चिन्ता करने से तो
नहीं चलेगा काम।

देखेगा ज्यों बन्द द्वार रे
लौटेगा क्या हृदय हार रे ?
बन्द द्वार खोलना पड़ेगा
बार बार करके प्रहार रे—
और कदाचित द्वार न लेगा
हिलने तक का नाम।
इसकी चिन्ता करने से तो
नहीं चलेगा काम।

४

पूजन भजन ध्यान आराधन
छोड़ छोड़ ये सारे
देवालय में अरे अकेला
बैठा क्यों पट-मारे ?
अन्धकार में लुक-छिप कर तू
किसका ध्यान रहा रे धर तू
आँख खोलकर देख, देवता
नहीं सामने, प्यारे।

वे तो गये जहाँ मर-पच कर
कृषक जोतता खेत
जहाँ मजूर कूटता कंकड़
ढोता सिर पर रेत
धूप-शीत में सबके साथ
धूल-धूसरित दोनों हाथ
तू भी उनकी भांति, शुचि वसन
त्याग, धूल में आ रे।

मुक्ति, मुक्ति तू कहाँ पायेगा,
मुक्ति कहाँ नादान?
सबके संग सृष्टि-बंधन में
बँधे स्वयं भगवान।
तज यह धूप-दीप, ये फूल
लगने दे कपड़ों में धूल
कर्मयोग में जुट प्रभु के सँग
तन का स्वेद बहा रे।

५

अनसुनी करके तेरी बात
न दे जो कोई तेरा साथ
तो तुही कसकर अपनी कमर
अकेला बढ़ चल आगे रे—
अरे ओ पथिक अभागे रे।

देखकर तुझे मिलन की बेर
सभी जो लें अपने मुख फेर
न दो बातें भी कोई करे
सभय हो तेरे आगे रे—
अरे ओ पथिक अभागे रे।
तो अकेला ही तू जी खोल
सुरीले मन मुरली के बोल
अकेला गा, अकेला सुन।
अरे ओ पथिक अभागे रे
अकेला ही चल आगे रे।

जायँ जो तुझे अकेला छोड़
न देखें मुड़कर तेरी ओर
बोझ ले अपना जब बढ़ चले
गहन पथ में तू आगे रे—
अरे ओ पथिक अभागे रे।
तो तुही पथ के कण्टक क्रूर
अकेला कर भय-संशय दूर
पैर के छालों से कर चूर।
अरे ओ पथिक अभागे रे
अकेला ही चल आगे रे।

और सुन तेरी करुण पुकार
अँधेरी पावस-निशि में द्वार
न खोलें ही न दिखावें दीप
न कोई भी जो जागे रे—
अरे ओ पथिक अभागे रे।
तो तुही वज्रानल में हाल
जलाकर अपना उर-कंकाल
अकेला जलता रह चिर काल।
अरे ओ पथिक अभागे रे
अकेला बढ़ चल आगे रे।

६

निबिड़ निशा के अन्धकार में
जलता है ध्रुव तारा
अरे मूर्ख मन दिशा भूल कर
मत फिर मारा मारा—
तू, मत फिर मारा मारा।

बाधाओं से घबरा कर तू
हँसना गाना बन्द न कर तू
धीरज धर तू, साहस कर तू
तोड़ मोह की कारा—
तू, मत फिर मारा मारा।

चिर आशा रख, जीवन-बल रख
संसृति में अनुरक्ति अटल रख
सुख हो, दुख हो, तू हँसमुख रह
प्रभु का पकड़ सहारा—
तू, मत फिर मारा मारा।

७

दुर्गम दीर्घ मार्ग जीवन का, दुख सन्ताप महान
तौ भी गाते चलें चलो मिल हरि-करुणा के गान ।

मार्ग देखते जगदाधार
खोले अमृत-भवन का द्वार
जहाँ क्लान्ति का नाश, हास-उल्लास, मार्ग-अवसान ।

देखो उस अनन्त की ओर
गाओ हो आनन्द-विभोर
क्षुद्र शोक दुख ताप का नहीं इसमें कहीं निशान ।

यह अनन्त आलय हो जिसका
उसको भय-चिन्तन है किसका
एक निमिष के तुच्छ भार से दबकर मत दो प्राण।

८

जीवन था जब नव प्रसून वत
इसमें थे कोमल दल शत-शत।
औ' वसन्त में दान उदार
दे देता था दल दो-चार
फिर भी रह जाते थे इसके
पास विपुल दल-पत्र सतत।

आया इसमें आज फल मधुर
रहा न इसके पास धन प्रचुर।
समय हो गया अब यह पक कर
हो जायेगा आप निछावर
रस के भार भरा इस ऋतु में
इसीलिए रहता है अवनत।

९

तेरे इकतारे में है जो एक तार तू वही बजा ले।
फुलवारी में एक फूल, तो एक फूल से थाल सजा ले

तेरी सीमा बँधी जहाँ तक
रुक जा सुख से पहुँच वहाँ तक
जो प्रभु तुझे एक कौड़ी दे
कौड़ी ही सानन्द उठा ले।

मत आ दुनिया की बातों में
भ्रम मत जिस-तिस की घातों में
मन ही मन तेरा मन जाने
मन में मन का मीत बसा रे।

इकतारे में एक तार जो, मन आवे तब वही बजा ले
फुलवारी में एक फूल तो एक फूल से थाल सजा ले

१०

इतना कहना गाँठ बाँध ले
तुझे मुक्ति धन पाना होगा।
यह जो पथ उस पार गया है
इस पथ पर ही जाना होगा।

निर्भय होकर मुक्त कण्ठ से
गाकर तू खेयेगा नैया,
झंझा की झकझोर लहर से
हँस हँस कर टकराना होगा।

भँवर पड़ी नैया को, भैया,
अपने आप छुड़ाना होगा।
पथ पर बिछे हुए काँटों को
दल कर आगे जाना होगा।

सुख की आशा गले लगा कर
डर डर कर तू प्राण न देना
पीना जो जीवन का अमृत,
तुझे मृत्यु-विष खाना होगा।

११

मुझको यही सुहाता।
शेष साधना हो मेरी, मैं
यह तो नहीं मनाता।
फल को मैंने कभी न खोजा
कौन उठाये इतना बोझा
जो भी फल हो फेंक धूल में
फिर से फूल खिलाता।

इसी तरह मेरे जीवन में,
है असीम व्याकुलता
नित्य नई साधना जगाती
नित्य नई आकुलता।
पाता हूँ सो तुरत चुकाता
फिर पाने को हाथ बढ़ाता
नित्य-दान का तार न टूटे
इसी लिए नित पाता।

१२

जीवन में पूर्ण हो न सकी पूजा जो कोई
जानता, हूँ जानता, है वह भी नहीं खोई।
अधखिली, बिना-खिली
मुरझाई जो कली
और वह नदी जिसकी धार मरुपथ में खोई
जानता, हूँ जानता, है खोई नहीं कोई।

जीवन में आज भी जो कुछ पीछे है छूटा
जानता, हूँ जानता, है वह भी नहीं झूठा।
मेरा अनागत सब
मेरा अनाहत सब
बजता है नित्य प्रति, तेरी वीणा में सोई
जानता, हूँ जानता, है खोया नहीं कोई।

१३

जहाँ अधम से अधम जहाँ पर दीनों से भी दीन
वहाँ राजते तेरे चरण उदार
सबके पीछे, सबसे नीचे, सब-खोयों के द्वार।
मैं चरणों में शीश नवाता
नमन कहाँ मेरा रुक जाता
तेरे चरण पहुँचते नीचे अपमानों के पास
नहीं पहुँचता मेरा नमन असार
सबके पीछे, सबसे नीचे सब-खोयों के द्वार।

अहंकार तो पहुँच न पाता तेरा जहाँ विहार
दीन-देश में धन-वैभव के पार
सबके पीछे, सबसे नीचे, सब-खोयों के द्वार।
सुख-सम्पति की चहल-पहल में
तुझे खोजता हूँ निष्फल में
सखा-हीन का सखा बना तू जहाँ खेलता खेल
वहाँ पहुँचता नहीं-न मेरा प्यार
सबके पीछे, सबसे नीचे, सब-खोयों के द्वार।

१४

यह मलिन वस्त्र त्यागना होगा
होगा रे इसी बार
मेरा यह मलिन अहंकार।
दैनिक धन्धों का मल मैला
इसके ऊपर-नीचे फैला
इतना तप्त हो गया है रे
सहना है दुश्वार
मेरा यह मलिन अहंकार।

अब तो दिन मुंदता है, निबटे
दिन के धन्धे सारे
वेला आई, आशा जागी
आएंगे प्रभु प्यारे।
जल्दी न्हा ले देर न करना
तुझे प्रेम-परिधान पहिरना
सन्ध्या-वन में कलियाँ चुनकर
तुझे गूंथना हार
अरे अब समय नहीं बेकार।

१५

असमय और अकारण, मेरी
जिस क्षण हुई पुकार
गहन निशा थी, मौन खड़ा था
तिमिर-ग्रस्त संसार।
घर के व्याकुल बोले "आह,
ऐसे अन्धकार में राह
किस विधि पहिचानेगा रे तू",
मैंने कहा विचार—
मेरे कर में है अपना ही,
दीपक जो तैयार
इसके ही प्रकाश में चलकर
हो जाऊँगा पार।

ज्यों ज्यों मैंने तेजमती वह
दीप-शिखा उकसाई
त्यों त्यों उसकी ज्योति आँख में
चकाचौंध हो छाई।
छाया में जा मिला उजाला
माया ने मुँह और निकाला
कुछ-देखे-कुछ-अनदेखे में
दृष्टि और बौराई।
गर्व-भरा जो चला वेग से,
धूल आँख में आई
काँपी शिखा अधीर पवन लग
पग पग पर कठिनाई।

सहसा लगा शीश में मेरे
वन का शाखा-जाल
दीपक बुझा, देखता हूँ क्या,
क्या जाने किस काल
छूटा पथ सुख-सार—
तिमिर-ग्रस्त संसार।
"रही न मुझमें शक्ति और अब"
गत-गौरव, नत-भाल
रोया ज्यों, हठात देखा, चल
चुपकी चुपकी चाल
पीछे आया है चिर-पथ का
साथी दीनदयालु।

१६

उसके कर में मधुर हास के फूलों का था हार
मेरे सँग में था दुःखों के तिक्त फलों का भार——
रंग-बिरंगा हार
अश्रु-रस-भरा भार।

"आओ, बोझ बदल लें" सहसा बोली वह चित-चोर
मैं खोया-सा रहा देखता, उसके मुख की ओर——
मुख शोभा का सार
रंग-बिरंगा हार।

लेकर गले लगाया मैंने उसका सुन्दर हार
उसने खोल स-कौतुक देखा मेरा वह उपहार——
आँसू का संसार
तिक्त फलों का भार।

"मैं जीती" यों कहती, हँसती गई निठुर वह भाग
सन्ध्या समय, तप्त दिन बीते, देखा मैंने जाग
मुरझाया बेकार
रंग-बिरंगा हार।

१७

राजाओं के रुचिर वेश में सजा रही हो जो शिशु प्यारा
पहिनाती हो जिसे रत्न का हार
खेल-कूद, आनन्द धूल का, मिट जाता है उसका सारा
वसनाभूषण बनते भीषण भार।
झटका खाकर टूट न जाये हार
मलिन धूल में हो न विमल शृंगार
इसीलिए बचकर रहता है दूर दूर औ' सबसे न्यारा
हिलते-डुलते चिन्ता करती वार—
राजाओं के रुचिर वेश में सजा रही हो जो शिशु प्यारा
पहिनाती हो जिसे रत्न का हार।

क्या होगा, माँ, सजकर सारे राजाओं के से ये साज
क्या होगा, माँ, पहिन रत्न का हार
द्वार खोल दो तो मैं छुटकर पहुँचूँ जीवन-पथ पर आज
जहाँ स्वेद से स्नेह, धूल से प्यार।
जुड़ा जहाँ पर विश्वजनों का मेला
भाँति भाँति के खेल जहाँ हर वेला
सहस्र स्वरों में बहती चहुँदिशि जहँ विराट-गाथा की धारा,
वहाँ नहीं मिलता इसको अधिकार—
राजाओं के रुचिर वेश में सजा रही हो जो शिशु प्यारा
पहिनाती हो जिसे रत्न का हार।

१८

बैठें, जो बैठे हैं घेरे द्वार
जायें, जिनको जाना है उस पार।
यदि प्रभात का पंछी, प्यारे,
आकर तेरा नाम पुकारे
इकला तुही चला जा
बिना-विचार।

कली प्रेम से करती है अनजान
तिमिर-निशा में शिशिर-सुरा का पान
फूल को नहीं निशि की आशा
उसका उर प्रकाश का प्यासा
रोता है वह देख
तिमिर-प्रस्तार।

१९

समय हो गया, उठो, चलो, लो
सिंहद्वार का फाटक खोलो।
सांग हुआ सब दर्शन-मेला चलना आज अकेले
बीत गया वह धूप-छाँह का खेल सदा जो खेले—
स्वप्न-भरी आँखों को धो लो
सिंहद्वार का फाटक खोलो।

व्योम दूर की तानें गाता,
अलख देश की ओर बुलाता।
हे सुदूर, अब प्राणबन्धु से अपनी प्रीति निभाओ
ये आवरण हटाओ सारे, सीधी राह दिखाओ—
राह दिखाओ, हे जगत्राता
व्योम दूर की तानें गाता।

अपने आशा के प्रदीप में
कैसी ज्योति जगाते हो—
रे साधक, रे प्रेमिक, जग में
क्या कुछ लेकर आते हो?

खाकर दुख की चोट, तुम्ह
प्राणों की वीणा झंकारे।
घोर विपद में
किस जननी का स
देख देख हरषाते हो

सकल सुखों में आग लगाकर
किसे खोजते फिरते दिन भर?
कौन, कौन वह
जिसके हित इतने व्याकुल हो,
पागल, अश्रु बहाते हो?

तुम्हें न कुछ भय-चिन्ता,
कौन तुम्हारा संग-सहाई?
मरण भूलकर
किस अनन्त प्राणाम्ब
सानन्द डुबकियाँ ख

२१

चलते चलते इकले पथ में
दीप हुआ निर्वाण
आया है तूफ़ान—
राह का साथी अब तूफ़ान।
दिग-दिगन्त में सर्वनाश कर
हँसता क्षण-क्षण अट्टहास कर
अस्त-व्यस्त करता है मेरे
केश-वेश-परिधान—
राह का साथी यह तूफ़ान।

चला जा रहा था जिस पथ पर
भुला दिया हा ! हन्त !
निविड़ निशा में जाना होगा
अब जाने किस पन्थ।
यही वज्ररव अरे कदाचित
तुझे दिखायेगा नूतन-पथ
और कहेगा कहाँ पहुँचकर
होगा निशि-अवसान—
राह का साथी यह तूफ़ान।

२२

दीप कहाँ, रे दीप कहाँ है लाओ
विरहानल से उसमें ज्योति जगाओ।
दीपक है पर शिखा नहीं है
क्या कपाल में लिखा यही है
इससे तो मर मिटना अच्छा, आओ
विरहानल से दीपक-ज्योति जलाओ।

अरे वेदना-दूती गाती, "प्राण,
जाग रहे हैं तेरे हित भगवान।
निशि के निबिड़ तिमिर में ऐसे
भेज रहे हैं प्रेम-सँदेसे,
दुःख-रूप में रखते तेरा मान—
जाग रहे हैं तेरे हित भगवान।"

गया गगनतल काले मेघों से भर
बादल-जल गिरता है झरझर झरझर।
इस निशीथ में रे किसके हित
सहसा प्राण हुए मम जागृत
उर में उठती हूक-हिलोरें क्योंकर—
बादल-जल गिरता है झरझर झरझर।

भर देता बिजली का क्षणिक उजाला
नयनों में है तिमिर और भी काला।
आज अमा के स्वर गम्भीर
बुला रहे जिस पथ के तीर
वही खोजता मेरा मन मतवाला—
नयनों में है तिमिर और भी काला।

दीप कहाँ, रे दीप कहाँ है लाओ
विरहानल मे उसमें ज्योति जगाओ।
घन पुकारते, कहते भूके
गमन न होगा अवसर चूके
आज निबिड़तम निशा-तिमिर, रे आओ
प्राणाहुति दे प्रेम-प्रदीप जलाओ।

२३

सब दुःखों का दीप सँजोकर
आज करूँगा यही निवेदन
दुख की पूजा हुई न पूरण।
जब दिनान्त में श्रान्त विहंगम
जाते अपने अपने नीड़—
सान्ध्य घण्ट बजता गम्भीर
अपना अन्तिम दीप उस घड़ी
नाथ, सँजोयेगा यह जीवन
दुख की पूजा होगी पूरण।

आज बहुत सी बीती बातें,
विफल वासना व्याकुल क्रन्दन
मन में करते हैं आन्दोलन।
पूजा की होमानल में जल
ये जब होंगे बन्धन-हीन—
सब निःसीम व्योम में लीन
अस्त तरणि की अन्त किरण में
मिल जायेगा जब आयोजन
दुख की पूजा होगी पूरण।

२४

मारो और मारो, प्रभु,
यों ही और मारो।
फिरता रहा छिपता मैं
तुमसे जी चुराता
आज पकड़ा गया हूँ
मुझे अब मत दुलारो—
मारो और मारो।

जो कुछ किया है संचय
तुम सब निकलवालो
जो कुछ दण्ड देना हो
सब दे आज डालो
या मैं ही हार जाऊँ
या, प्रभु, तुम्ही हारो—
मारो और मारो।

केवल हँस-खेल-कूद
समय अब तक बिताया
कितना रुलाओगे अब,
रुलाओ, लो मारो—
मारो और मारो, प्रभु,
यों ही और मारो।

२५

मैं तुझे जानता भली प्रकार
री विदेशिनी।
तू रहती दूर सिन्धु के पार
री विदेशिनी।

देखा तुझको शरद प्रात में
मधुर मदिर माधवी रात में
है हृदय-बीच देखा सौ बार
री विदेशिनी।

नभ में बहुत लगाकर कान
सुने, सुने हैं तेरे गान
मैं सौंप चुका हूँ तुझको प्राण
री विदेशिनी।

आज भुवन भर घूम शेष में
आया हूँ इस नये देश में
मैं अतिथि बना हूँ तेरे द्वार
री विदेशिनी।

२६

अन्धकार में रजनी के थे
मैंने जितने दीप जलाये
बुझा, बुझा दे इन्हें, अरे मन
खोल आज जो द्वार लगाये।
आज न जाने कब मेरे घर
सूर्य-किरण ने किया प्रभात
मिट्टी के प्रदीप का अब क्या
काम, भले मिट्टी हो जाये।
बुझा अरे मन दीप रात के
खोल अरे जो द्वार लगाये।

छोड़ छोड़ मत छेड़ आज तू
इस टूटी वीणा के तार
घर से निकल, खड़ा हो बाहिर,
नीरवता में अपने द्वार।
अरे आज सुन सब आकाश
सकल समीरण, सकल प्रकाश
खोल विराट कण्ठ गाते हैं,
तेरे बनकर गीत सुहाये
छोड़ छोड़ यह टूटी वीणा
खोल खोल ये द्वार लगाये

२७

राजपुरी में वंशी गाती
समय-शेष की तान
पथ में पथिक पूछते मुझसे,
"क्या लाया है दान"।
सबको खोल दिखाऊँ, भाई
ऐसी मेरी कौन कमाई—
मेरे संग आज बस मेरे
यही चार-छः गान।

घर में मुझे रिझाने पड़ते
सदा बहुत से लोग
जितने मुँह उतनी ही बातें,
उतने ही उद्योग।
आज बन्धु को चला रिझाने
उर में लेकर बस ये गाने
प्रिय के उर में डाल करूँगा
इनको मूल्य प्रदान।

२८

मैं तो चला अकेला तुमसे मिलने, जीवनदाता
नीरव निशि में किन्तु कौन यह पीछे पीछे आता।
आँख बचाता हूँ बहुतेरी
राहें चलता घूम-घुमेरी
मैं कहता हूँ बला टली, फिर इसको पीछे पाता
जीवनदाता।

इसकी चंचल मस्त चाल का, रे क्या ठौर-ठिकाना।
सब बातों के बीच चाहता अपनी बात बनाना।
यह ही है मेरा "मैं" प्रभुवर,
लज्जा नहीं न इसमें तिल-भर
इसको लेकर किस मुंह से मैं द्वार तुम्हारे आता।
जीवनदाता।

२९

जाय जब जीवन का रस सूख,
बहो, प्रभु, बन करुणा की धार।
हृदय की हो माधुरी विलुप्त
करो तब गीति-सुधा-संचार।

कर्म जब गरजे प्रबलाकार,
गरज से गूंज उठे घर-द्वार—
हृदय-प्रान्तर में, नीरव नाथ,
शान्त चरणों से करो विहार।

कृपण बनकर जब आश्रयहीन,
तिरस्कृत बैठा हो मन दीन—
खोल तब द्वार, अधीश उदार,
दिखाओ राज-विभव-विस्तार।

वासना की घुमड़े जब धूल,
अन्ध हो ज्ञान जाय जब भूल—
नाथ, हे नाथ पवित्र, अनिद्र,
बनो तब रुद्रालोक-प्रसार।

३०

दुनिया के ये और लोग जो
करते मुझे दुलार
बाँधे रखते कठिन पाश में
मुझको, प्राणाधार।
प्रेम तुम्हारा सबसे भारी
तभी अनोखी रीति तुम्हारी
आप छिपे रहते, न बाँधते
जन को किसी प्रकार।

भूल न जाऊँ, नहीं छोड़ते
इकला वे इस मारे—
इधर दिवस पर दिवस बीतते
दरशन बिना तुम्हारे।
मैं तुमको सुमरूँ बिसराऊँ
दूर रखूं या पास बुलाऊँ
बाट सदैव देखता मेरी
प्रभो, तुम्हारा प्यार।

३१

और रखो मत अन्धकार में
मुझे देखने दो भगवान
मेरी आकृति निराकार में
मुझे देखने दो भगवान।

अगर रुलाना अभी रुलाओ
सुख की दुःसह ग्लानि हटाओ
धुलें नयन मम अश्रुधार में—
मुझे देखने दो भगवान।

अन्धकार में मायावश हो
जाने किस किस तिमिर-पुंज को
अपनाता हूँ बार बार मैं—
मुझे देखने दो भगवान।

मैंने दौड़-धूप कर जोड़े
इस जीवन में सपने कोरे
ज्योति छिपी जो तम-विकार में
मुझे देखने दो भगवान।

३२

देव समझ कर दूर खड़ा हूँ
अपना समझ नहीं अपनाता
पिता समझ नमता चरणों में
बन्धु समझ उर से न लगाता।

सहज प्रेम-वश तुम्हीं स्वयं जब
मेरे बन कर आये हो, तब—
संगी समझ तुम्हें सुख से मैं
क्यों जयमाल नहीं पहिनाता।

प्रभो, भाइयों में तुम भाई
उनसे मैंने आँख चुराई
बाँट भाइयों को अपना धन
क्यों न तुम्हारा कोष बढ़ाता।

क्लान्ति-विहीन छोड़ सब सुख-दुख
आता क्यों न तुम्हारे सम्मुख
प्राण सौंप कर तुम्हें, प्राणधन,
प्राण-सिन्धु में पैठ न जाता।

३३

छिपे हुए हो तभी खोजता फिरता है संसार
मिल जाते जो सहज, न करता कोई सार-सँभार।
पड़ा हुआ पाया धन तो ज्यों
खो देता बे-जाने कब क्यों
खोया धन पाकर परन्तु मन हो जाता गुलजार।
छिपे हुए हो तभी खोजता फिरता है संसार।

जो आ जाता स्वयं निकट वह रहता मानो दूर
जिसे खींचकर निकट बुलाते वही निकट भरपूर।
पहिले दूर धरा को छोड़
जल छिपता बादल की क्रोड
प्यास धरा की हर पाती है तब वर्षा की धार
मिल जाते जो सहज, न करता कोई सार-सँभार।

३४

दिन पर दिन जाते हैं, बैठी
पथ के एक किनारे—
गाने पर गाना गाती हूँ
सुरभि-पवन में प्यारे।
कटतीं नहीं विरह की घड़ियाँ
तभी गूँथ कर स्वर की लड़ियाँ
करती हूँ खिलवाड़, बीनती
स्वप्न-लोक के तारे।

दिन पर दिन जाते हैं, मिलती
नहीं तुम्हारी झाँकी।
गाने पर गाना गाती हूँ,
मैं बैठी एकाकी।
ऐसा न हो कि स्वर थम जाये
इसीलिए तुम पास न आये
प्रेम व्यथा देता है उनको
जो प्रेमी के प्यारे।

३५

पिया आये, पास बैठे, पर न जागी री
हाय कैसी नींद सोई, तू अभागी री।
निरव निशि में नाथ आये
मृदुल वीणा साथ लाये
तान सपनों में बजाई, प्रेम-पागी री
हाय कैसी नींद सोई, तू अभागी री।

गन्ध उनकी लिए दक्षिण वायु मदमाती
नाचती फिरती तिमिर में, प्राण तरसाती
हाय सूनी रात जाती,
पास आते, मैं न पाती
पिया की उर-माल मेरे उर न लागी री
हाय कैसी नींद सोई, तू अभागी री।

३६

प्राणों में बजती क्या तानें—
मैं जानूँ, मेरा मन जाने।
किसके लिए सदैव जागती
किससे कौन विभूति माँगती
पथ की ओर लगे क्यों अपलक
मेरे दोनों नयन दिवाने—
मैं जानूँ, मेरा मन जाने।

प्रातः बाल-किरण मुस्काती
सन्ध्या वन में जाल बिछाती।
वंशी बजती साँझ सवेरे
व्याकुल फिरते तन-मन मेरे
किन किन रागों में गाती है
किसके कौन कौन से गाने—
मैं जानूँ, मेरा मन जाने।

३७

हैं आज चाँदनी रात गये सब वन में—
सब, नव-वसन्त के इस उन्मत्त पवन में।
ना, मैं नहीं जाऊँगी वन में
पड़ी रहूँगी यहीं मगन मैं
हाँ, यहीं अकेली अपने विजन भवन में—
मैं नहीं जाऊँगी इस उन्मत्त पवन में।

अब करके यत्न अनेक भवन यह अपना
है झाड़-पोंछ कर, सजा-बिछा कर रखना।
मुझे जागना भी तो है अब
आयेंगे वे क्या जाने कब
जो याद आ गई मेरी उनके मन में।
मैं नहीं जाऊँगी इस उन्मत्त पवन में।

३८

दीप बुझ गया है मेरा
इस नैश पवन का झोका खाकर
अन्धकार में लौट न जाना,
प्रियतम, चुपके चुपके आकर।
जब समीप आओगे, प्राण,
तम में भी लोगे पहिचान
रजनीगन्धा की सुगन्धि से
भरा-महकता है मेरा घर
अन्धकार में लौट न जाना,
प्रियतम, चुपके चुपके आकर।

तुमको मेरी याद न जाने
आ जाये किस घड़ी, छबीले
इसी लिए मैं जाग रही हूँ
घड़ी घड़ी गा गान रँगीले।
शेष निशा में लगता है डर
किया नींद ने आँखों में घर
जो मेरे इस क्लान्त कण्ठ में
स्वर न रहे तो तुम करुणाकर
अन्धकार में लौट न जाना,
प्रियतम, चुपके चुपके आकर।

३९

जुटे मेघ पर मेघ, अँधेरा
झुक आया सब ओर
मुझको क्यों, हे नाथ, द्वार पर
रखा अकेला छोड़।
काम के दिवस, विविध काज में
रहता हूँ बहु-जन-समाज में;
बैठा हूँ मैं आज लगाये,
एक तुम्हीं से डोर
मुझको क्यों, हे नाथ, द्वार पर
रखा अकेला छोड़।

दरशन दोगे नहीं मुझे जो,
प्रभो, करोगे हेला,
कैसे कहो कटेगी मेरी
ऐसी बादल-वेला।
आँख लगाये दूर, एक टक
बैठा देख रहा हूँ, अपलक
अमितानिल में रोते फिरते
मेरे प्राण विभोर
मुझको क्यों, हे नाथ, द्वार पर
रखा अकेला छोड़।

४०

आज चाहता तुम्हें सुनाना
फिर से, प्राणाधार
वही बात जो सुना चुका हूँ
पहिले बारम्बार।
यह अविरल वर्षा की धार
छेड़ हृदय-वीणा के तार
आज कर रही है प्राणों में
गुंजित जो झङ्कार—
वही चाहता तुम्हें सुनाना
फिर से, प्राणाधार।

नहीं न इसमें अर्थ, न मुझको
कारण का कुछ चेत।
पुञ्जित हृदय-वेदना का, प्रभु,
है यह स्वर-संकेत।
सपनों में जो वाणी मन-मन
बज उठती है पल-पल क्षण-क्षण
आज सघन घन-अन्धकार में
कानों में गुञ्जार—
वही चाहता तुम्हें सुनाना
फिर से, प्राणाधार।

४१

इस नश्वर की कब तक बैठा
करता रहूँ और रखवाली
मेरे बस की बात नहीं अब,
नाथ, जागना रातें काली।
रात-दिवस चिन्ता का मारा
द्वार बन्द कर बैठा न्यारा
जो आता है निकट, दुराता
समझ उसी को कपटी-जाली।

इसीलिए इस निर्जन घर में
होता नहीं किसी का आना
चिरानन्दमय भुवन तुम्हारा
बाहिर खेल खेलता नाना।
तुम भी स्यात न आने पाते
आकर लौट लौट हो जाते।
रखना जिसे चाहता वह भी
मिलता, हाय, धूल में खाली।

४२

अन्ध निशा में इकला पागल रोता बाल-बखेरे
कहता है बस, समझा दे रे, समझा, समझा दे रे।
मैं तेरे प्रकाश का पाला
मेरे सम्मुख परदा डाला
मुझसे अपना रूप छिपाया, यही दुःख मन मेरे
समझा, समझा दे रे।

अन्धकार में अस्त तरणि के लिखे लेख बहुतेरे
इसका अर्थ बता दे मुझको, मतलब समझा दे रे।
जीवन-वंशी की ध्वनि प्यारी
मुझ याद थीं तेरी सारी
आज मरण-वीणा के सब स्वर साधूंगा मैं तेरे
समझा, समझा दे रे।

४३

मैं बहुत वासनाओं के पीछे फिरता हूँ हैरान
वञ्चित करके मुझे बचाया तुमने, हे भगवान।
यह कृपा कठोर महान
व्याप्त सकल जीवन में मेरे रहती, कृपानिधान—
किया अयाचित जो कुछ दान
व्योम, प्रकाश, देह, मन, प्राण;
है यह जो उत्तम दान
इसके योग्य किये लेते हो, दिन पर दिन, भगवान
अति-इच्छा के संकट से तुम करके मेरा त्राण।

मैं तुम्हें खोजने जाता हूँ तो कभी चाव से जाता
और कभी आलस-वश पथ में वृथा विलम्ब लगाता
तुम प्रेम-तत्त्व के ज्ञाता
बार बार मेरे सम्मुख से हट जाते, जन-त्राता।
निठुर रूप में दया दिखाते
मिलन चाहते तदपि दुराते;
जो मधुर मिलन का मान
उसके योग्य, पूर्ण जीवन कर, कर लोगे, भगवान
आधी-इच्छा के संकट से करके मेरा त्राण।

४४

तेरे स्वर्ण-थाल में आज सजाऊँगा मैं अश्रुधार
जननी हे, गूथूँगा तेरे उर का मुक्ताहार।
सूर्य-चन्द्र चरणों में तेरे
माला बन देते हैं फेरे
तेरे उर पर सोहेगा यह मेरे
दुख का अलंकार।

तेरा धन, धन-धान्य सभी यह, तेरी सुधरोहर मा
देना हो दे, लेना हो ले, इच्छा हो सो कर, मा
दुख पर मेरी कठिन कमाई
इस अनमोल रत्न को, माई
माई, दे प्रसाद तू मोल रही, यह
मेरा अहंकार।

४५

मुझे ज्ञात है दिन बीतेगा,
हाँ, यह दिन जायेगा बीत।
कभी समय होगा जब शेष
करुण हास हँस मलिन दिनेश
अन्त विदा के नयन खोलकर
देखेगा मेरा मुख पीत।
पथपर इधर बजेगी वेणु
वन में उधर चरेंगी धेनु
आँगन में शिशु खेलेंगे हँस
पक्षी मिल गायेंगे गीत—
तौ भी यह दिन बीत जायगा,
हाँ, यह दिन जायेगा बीत।

तेरे चरणों में अब मेरी
इतनी ही विनती, भगवान्—
जाने से पहिले, यह बात
जानूँ, क्यों बसुमति ने, नाथ,
नभ की ओर गोद फैलाकर
माँगा था मेरा वरदान

क्यों निशीथ की नीरवता ने
उसकी सुनी पुकार, न जाने
सोये हुए प्राण जागे क्यों
देख प्रभात-किरण द्युतिमान।
चलने से पहिले यह जानूँ,
है इतनी विनती, भगवान।

और अन्त में, प्रभो, सांग हो
जब इस जीवन का व्यापार—
गान शेष हो जब, करुणाकर,
तान रुके सम पर ही आकर।
छैहों ऋतु के फल-फूलों से
भर पाऊँ अपना भण्डार।
इस जीवन के शुभ प्रकाश में
तुझको देखूँ सदा पास में।
डाल जा सकूँ तेरे उर में
हँस-हँस अपने उर का हार
अन्त समय में, प्रभो, सांग हो
जब इस जीवन का व्यापार।

४६

दिन की वेला आये थे वे
मेरे घर के द्वारे
कहते थे हम पड़े रहेंगे
यों ही एक किनारे
प्रभु की सेवा में हम सारे
मदद करेंगे तेरी, प्यारे
पूजा का प्रसाद पायेंगे
जो कुछ भाग्य हमारे।

यों कहकर कुछ सकुचाये-से
सीधे-से कर जोड़
सिकुड़-सिमट कर बैठ गये वे
कोने में इक ओर।
रात हुई, देखा, बरजोरी
देवालय में करते चोरी
मलिन करों से पूजा की बलि
हाय लूटते सारे।

४७

एक एक करके अपने ये
तार पुरानें खोलो—
उठो अब नया सितार सँजो लो।
बीत चुका अब दिन का मेला
सभा लगेगी सन्ध्या-वेला
अन्तिम तान बजानेवाला
है अब आने को, लो—
उठो अब नया सितार सँजो लो।

खड़ी अँधेरी रात द्वार पर
उठो, खोल दो द्वार
सप्त-लोक की नीरवता जो
घर में करे विहार।
अब तक जो गाये हैं गान
होने दो उनका अवसान
अरे यन्त्र यह, यन्त्र तुम्हारा,
यही भूल जाओ, लो—
उठो अब नया सितार सँजोलो।

४८

हाय, अतिथि, हो गई अभी से
क्या तेरे जाने की वेला--
देख सजाया था मैंने तो
निशि-भर को आसन अलबेला।
आया था तू दुबिधा धारे
मन में ले कुछ अभिलाषा रे,
नीरव-नयन, साँझ भर प्यारे
यह क्या खेल ख्याल का खेला--
हाय, अतिथि, हो गई अभी से
क्या तेरे जाने की वेला।

गाया नहीं गीति-भाषा में
अपनी प्रत्याशा का गाना--
विटप-वृन्त पर बैठा पंछी
भूल गया पर नीड़ बनाना।
"जान" हुई, न हुई "पहिचान"
प्रश्न हृदय में था पूछा न
मन की आकांक्षा की तैंने,
अरे स्वयं क्यों की अवहेला--
देख सजाया था मैंने तो
निशि-भर को आसन अलबेला।

४९

आज शरद में कौन अतिथि
आया प्राणों के द्वारे
आनन्द गान गा रे मन, तू
आनन्द गान गा रे।

नील व्योम की नीरव वाणी
शिशिर-सिक्त यह विकल कहानी
वीणा के निज तार तार में
बोल उठे, गुञ्जारे।

शस्य-खेत के स्वर्णिल गान
इनमें अरे मिला दे तान
भरी नदी की अमल धार में
स्वर दे आज बहा रे।

अरे अतिथि आया जो द्वार
उसके मुख की ओर निहार
बाँह पकड़ कर उसकी घर से
आज निकल पड़ प्यारे।

५०

उसके, एक हाथ में कठिन कृपाण
एक हाथ में हार
तोड़ा तेरा द्वार।

नहीं भीख का वह मुहताज
लेगा जीत बलात
तेरे उर का प्यार।

आया मरण-मार्ग कर पार
जीवन में वह आज
सज वीरों का साज।

थोड़े से होगा न प्रसन्न
सब-कुछ पर इकबार
कर लेगा अधिकार

५१

विदा कर दिया, अरी, जिसे
नयनों में भरकर नीर
अब लौटायेगी उसको तू,
किस छल के बल, बीर?
आज माधवी निशा कुसुम-वन
मन को करते है क्या उन्मन
याद दिलाता है क्या उसकी
वन का स्निग्ध-समीर
अब लौटायेगी उसको तू,
किस छल के बल, बीर।

उस दिन तो छाया था उर पर
मधु-निशि का उल्लास
दसों दिशाओं में मुकुलित था
नव-कुसुमों का हास।
उस दिन, उस सोहाग की रात
कर लेती मन की दो बात
पहिना देती उसके उर में
अपने उर का चीर
अब लौटायेगी उसको तू,
किस छल के बल, बीर।

५२

आली री मन करता है, अपने जी की
मै भी तेरी तरह सुनाती।
उनके चरण-युगल को छोड़
बैठ अकेले में आ-ओड़
रोती कभी, कभी हँसती मैं,
देख देख मुख-ज्योति सिहाती।

तेरे तो मन में बातें हैं,
मेरे मन में बात न आती
मैं क्या बात करूँ, क्या बोलूं,
किस सुख-दुख की मिशरी घोलूं,
कहना तो कुछ नही, साध पर
यही कि सौ-सौ बात बनाती।

इतनी तुझे बात क्या करनी
होतीं, यह मैं समझ न पाती
सन्ध्या होते ही मैं तो, अलि
बैठ अकेली रोती छल-छल
कारण कोई पूछ बैठता,
तो मैं चुप बैठी रह जाती।

५३

नहीं जानता, नाथ, 'साधना'
किसको कहता है संसार
खेला हूँ मैं नित्य धूल में
बैठा यहीं तुम्हारे द्वार।
अन्धकार में मैं अज्ञान
डरा नहीं तुमसे भगवान
मन में आते ही उठ आया
बे-खटके औ' विना-विचार।

नाथ, तुम्हारे ज्ञानी अब सब
कहते हैं मुझसे दुत्कार
"आया तू न विहित पथ से, जा
लौट, लौट जा अरे, गँवार।"
द्वार लौटने का कर बन्द
बाँधो मुझे बाहु के बन्ध
भगवन्, मुझे बुलाते हैं वे
मिथ्या बारम्बार पुकार।

५४

वन्दी बनूं प्रेम के हाथों
बैठा हूँ यह लगन लगाये
इसीलिए यह देर हुई है,
इसीलिए ये दोष उठाये।
जब कागज-कानून सँभाले
आते मुझे बाँधनेवाले,
मैं जाता हूँ खिसक। सहूँगा
इसका दण्ड मिले जो-चाहे।
वन्दी बनूं प्रेम के हाथों
बैठा हूँ यह लगन लगाये।

निन्दा करते लोग जगत के
निन्दा उनकी नहीं-न झूठी
पड़ा रहूँगा सबसे नीचे,
ऊपर बैठो दुनिया रूठी।
अब तो शेष हो चुकी वेला
बीता मोल-तोल का मेला
आये थे जो मुझे बुलाने
लौट गये सब मुँह लटकाये
वन्दी बनूं प्रेम के हाथों
बैठा हूँ यह लगन लगाये।

५५

आज तुम्हारे न्यायालय में
आया हूँ भगवान
तुम्हीं करो अपने हाथों से
मेरा दण्ड-विधान।

मृषादेव को शीश नवाया
मिथ्याचारों मे सुख पाया
पापी मन से किया किसी का
मैंन जो नुकसान
तुम्हीं करो अपने हाथों से
मेरा दण्ड-विधान।

दिया लोभ-वश दुःख किसी को
हुआ भीति-वश धर्म-विमुख जो
क्षण भर को भी जो सुख माना
देख और की हानि
तुम्हीं करो अपने हाथों से
मेरा दण्ड-विधान।

जीवन तुमने दान दिया जो
मैंने कलुषित उसे किया जो
अपना आप विनाश किया
कर मृषा-मोह-अभिमान
तुम्ही करो अपने हाथों से
मेरा दण्ड-विधान।

५६

जिस पुण्य-स्थल में, प्रभु, दो मन
मिलें वहाँ तुम करो निवास
जिस पथ पर दो हृदय मिल चलें
उस पथ पर तुम करो प्रकाश।

जहाँ मिले दो जन की दृष्टि
वहाँ करो करुणामृत-वृष्टि,
दोनों मन में, नाथ, जगाओ
एक उमंग, एक अभिलाष।

ये जो अपनी कुटी सजावें
कुटिया में जो दीप जलावें,
प्रभो, आरती बने तुम्हारी
उसी दीप का दिव्य प्रकाश।

मधुर मिलन में इनके दो मन
प्रेम-वृन्त पर खिलें सुमन बन,
विश्वदेव, चिर-प्रेम तुम्हारा
चिर-वसन्त का करे विकास।

५७

तुम मुझे चाहते हो यह बात
मुझे है ज्ञात।
क्यों मुझे रुलाते हो दिन रात
मुझे है ज्ञात।

तिमिर-ज्योति की उलट-पलट में
क्यों लिपटे छाया के पट में
तुम छिपे छिपे फिरते हो तात—
मुझे है ज्ञात।

जग के विविध काम-काजों में
कितने स्वर, कितने साज़ों में
तुम मुझे बुलाते नित्य हठात—
मुझे है ज्ञात।

हाट-उठे, हे खेवनहार
तुम दिनान्त का अन्तिम भार
हो खेकर ले जाते किस घाट—
मुझे है ज्ञात।

५८

कोलाहल अब नहीं, हृदय पर
छाई है रजनी गम्भीर
रह रह कर सुन पाता केवल
दूर सिन्धु का गर्जन धीर।
लौटी सिमिट वासना मन में
बाहिर छाया तिमिर गगन में
एक प्रदीप-शिखा है केवल
जलती निभृत हृदय के तीर।

चिर-मंगल में मिली माधुरी
खेल हो गया समाधान सब
चपल-चंचला लहरी-लीला
पारावार-विलीन हुई अब।
बजता उर में सतत-स्वतन्त्र
शान्ति शान्ति का नीरव मन्त्र
कान्ति अरूप देखते उर में
प्रमुदित मेरे नयन स-नीर।

५९

खी, जानती हूँ निकले हैं वाहिर आज विहारी
: उर में बोल रही है उनकी पग-ध्वनि प्यारी।
किघर, कहाँ, कब, कैसे आये
जल-थल वन-उपवन में छाये—
ो बात ले झगड़ रहे हैं शुक-पिक बारी-बारी।

य, भला क्यों मैंने यह घर दूर बसाया इतनी
ना होगा उन्हें न जाने बाट घूमकर कितनी।
अपना हृदय बिछाकर, प्यारी
सड़क ढाँक दी मैंने सारी
ै व्यथा पर मेरी, उनका चरणपात सुखकारी।

६०

मुझे इसी पथ-अवलोकन में आता है आनन्द
धूप-छाँह के खेल निकलते वर्षा-शरद-वसन्त।
यहीं सामने आते-जाते
समाचार लाते, ले जाते
मैं मन में प्रसन्न रहती हूँ बहती वायु सुमन्द।

दिन भर अपलक-नयन अकेली पड़ी रहूँगी द्वारे
आते ही शुभ घड़ी मिलेंगे सहसा दर्शन प्यारे।
तब तक बैठी पल-पल क्षण-क्षण
हँसती-गाती हूँ मैं मन-मन
रह रह कर आती है बहती शीतल सुमन-सुगन्ध।

६१

गाने लायक हुआ न कोई गान
देने लायक दिया नहीं कुछ दान।
लगता है ज्यों सभी रह गया बाक़ी
तुमसे केवल कर आया चालाकी
कब होगा यह जीवन पूर्ण, प्रभो, कब
जीवन पूजा होगी यह अवसान।

और सबों की सेवा में मैं भरसक
जुटा जुटा कर देता अर्घ्य नवीन
सच्चा-झूठा सभी सँजोता थक-थक
जिससे मुझको कहे न कोई दीन।
तुमसे तो कुछ छिपा न, अन्तर्यामी
तभी मुझे है इतना साहस, स्वामी,
जो है वही चढ़ाता हूँ चरणों में—
नित्य-अनावृत अति दरिद्र यह प्राण।

बँगला जाननेवाले पाठकों की सुविधा के लिए मूल गीतों की प्रथम पंक्ति की सूची नीचे दी जाती है।

हिन्दी गीत का नम्बर	मूल गीत की प्रथम पंक्ति	पुस्तक का नाम
१	বিপদে মোরে রক্ষা করো	গীতাঞ্জলি
२	ওরে ভীরু তোমার হাতে নাই	গীতবিতান ১
३	তোর আপন জনে ছাড়বে তোরে	,,
४	ভজন পূজন সাধন আরাধনা	গীতাঞ্জলি
५	যদি তোর ডাক শুনে কেউ	গীতবিতান ১
६	নিবিড় ঘন আঁধারে জ্বলিছে ধ্রুবতারা	,,
७	দীর্ঘ জীবন পথ, কত দুঃখ তাপ	,,
८	জীবন যখন ছিল ফুলের মতো	,,
९	একমনে তোর একতারাতে	,,
१०	এই কথাটা ধরে রাখিস	,,
११	সেই তো আমি চাই	,,
१२	জীবনে যত পূজা হোল না সারা	গীলাঞ্জলি
१३	যেথায় থাকে সবার অধম	,,
१४	এই মলিন বস্ত্র ছাড়তে হবে	,,
१५	অকারণে, অকালে মোর	গীতবিতান ১

हिन्दी गीत का नम्बर	मूल गीत की प्रथम पंक्ति	पुस्तक का नाम
১৬	তার হাতে ছিল	গীতবিতান ২
১৭	রাজার মতো বেশে তুমি	গীতাঞ্জলি
১৮	যে থাকে থাক না দ্বারে	গীতবিতান ১
১৯	এখন আমার সময় হোলো	,, ১
২০	কোন আলোতে প্রাণের প্রদীপ	গীতাঞ্জলি
২১	যেতে যেতে একলা পথে	গীতবিতান ১
২২	কোথায় আলো, কোথায় ওরে আলো	গীতাঞ্জলি
২৩	আমার সকল দুখের প্রদীপ জ্বেলে	গীতবিতান ১
২৪	আরো আরো, প্রভু, আরো আরো	,,
২৫	আমি চিনি গো চিনি তোমারে	,, ২
২৬	আঁধার আসিতে রজনীর দীপ	নৈবেদ্য
২৭	রাজপুরীতে বাজায় বাঁশী	গীতবিতান ১
২৮	একলা আমি বাহির হলেম	গীতাঞ্জলি
২৯	জীবন যখন শুকায়ে যায়	,,
৩০	সংসারেতে আর যাহারা	,,
৩১	আর রেখোনা আঁধারে আমায়	গীতবিতান ১
৩২	দেবতা জেনে দূরে রই দাঁড়ায়ে	গীতাঞ্জলি
৩৩	লুকালে বলেই খুঁজে বাহির করা	গীতবিতান ২
৩৪	দিন পরে যায় দিন	,,
৩৫	সে যে পাশে এসে বসেছিল	গীতাঞ্জলি

हिन्दी गीत का नम्बर	मूल गीत की प्रथम पंक्ति	पुस्तक का नाम
३६	কী সুর বাজে আমার প্রাণে	गीतवितान २
३७	আজ জোৎস্না রাতে সবাই গেছে বনে	,, १
३८	দীপ নিভে গেছে মম	,, २
३६	মেঘের পরে মেঘ জমেছে	गीताञ्जलि
४०	আজি তোমায় আবার চাই শুনাবারে	गीतवितान २
४१	যা হারিয়ে যায় তা আগলে বসে	गीताञ्जलि
४२	আঁধার রাতে একলা পাগল	गीतवितान १
४३	আমি বহু বাসনায় প্রাণপণে চাই	गीताञ्जलि
४४	তোমার সোনার থালায় সাজাবো আজ	,,
४५	জানি গো দিন যাবে	गीतवितान १
४६	তারা দিনের বেলা এসেছিল	गीताञ्जलि
४७	একটি একটি করে তোমার	,,
४८	হায় অতিথি, এখনি কি হোল	गीतवितान २
४६	শরতে আজ কোন অতিথি	गीताञ्जलि
५०	এক হাতে ওর কৃপাণ আছে	गीतवितान १
५१	বিদায় করেছো যারে	,, २
५२	ওলো সই, ওলো সই	,, २
५३	জানি নাই গো সাধন তোমার	,, १
५४	প্রেমের হাতে ধরা দেব	गीताञ्जलि
५५	আমার বিচার তুমি করো	गीतवितान १

हिन्दी गीत का नम्बर	मूल गीत की प्रथम पंक्ति	पुस्तक का नाम
५६	দুজনে যেথায় মিলিছে	গীতবিতান ১
५७	তুমি যে আমারে চাও	,, ১
५८	গভীর রজনী নামিল হৃদয়ে	,, ১
५६	সে যে বাহির হোল	,, ২
६०	আমার এই পথ চাওয়াতেই	,, ১
६१	গাবার মত হয়নি কোনো গান	গীতাঞ্জলি